‘पैर तले की जमीन’ नाटक में आधुनिकता बोध

डॉ. जितेन्द्र जे.वनजारा
अध्यापक,
पीटीसी कोलेज, आणंद

हिन्दी नाटक साहित्य में भारतेन्दु और प्रसाद के बाद यदि लीक से हटकर काम करने में कोई नाम उभरता है, तो वह है– मोहन राकेश । हालाँकि बीच में और भी कई नाम हैं, जिन्होंने आधुनिक हिन्दी नाटक की विकासयात्रा में महत्वपूर्ण योगदान दिया, किन्तु मोहन राकेश का लेखन एक दूसरे ही धृवांत्त पर नजर आता है। इसलिए ही नहीं कि उन्होंने हिन्दी नाटक को अंधेरे बन्द कमरों से बाहर निकाला और उसे रोशनी दी । उन्होंने उसे एक राष्ट्रीय स्तर ही नहीं प्रदान किया वरन् उसके सदियों के अलग–अलग प्रवाह की विश्व नाटक की एक सामान्य धारा की ओर भी अग्रसर किया । इसीलिए मोहन राकेश को आधुनिक नाटक का मसीहा माना गया है।

मोहन राकेश ने साहित्यिक परंपराओं, सामाजिक, राजनीतिक आदि का त्याग कर युगीन समस्या को आधुनिकता के विभिन्न पहलुओं को कथावस्तु, पात्र एवं समस्याओं को इतिहास की पृष्ठभूमि के आधार पर नवीन रूप में विविध स्तर पर अपने नाटको में सम्प्रेषित किया है । आधुनिकता हमेशा परिवर्तनशील है । जिसका रूप स्थिर या शाश्वत नहीं है । आधुनिकता आज हमारी सांस्कृतिक चेतना के साथ अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है । आज मनुष्य अपना जीवन अतीत की अपेक्षा वर्तमान में व्यतित करना चाहता है । आज के यांत्रिकी युग में मानव का जीवन मशीनों पर आश्रित हो गया है । अतः पाश्चात्य जीवन और रहन–सहन से प्रभावित मानव आज मनोरंजन के पीछे पागल होकर चलते हैं । गाँव में आधुनिक तरह की असुविधाओं के कारण लोग अधिकतम शहर में आते हैं तथा सरकारी दफ्तर भी अधिकांश शहर में ही है । इसी कारण मानव घर बन्धुओं को छोड़कर शहरों में जाकर रहने लगे हैं । स्वतंत्रता का बोध सभी लोगों में आ गया हैं । मानव जीवन को आधुनीकरण एवं नगरीकरण ने बहुत अधिक प्रभावित किया है । इसी के कारण आज उनके जीवन में अशान्ति, तनाव, टूटन एवं बिखराव आदि भर गये हैं । मोहन राकेश ने इसी प्रकार के प्रसंगो को आधार बनाकर ‘आषाढ़ का एक दिन’, ‘लहरों के राजहंस’, ‘आधे अधूरे’, ‘पैर तले की जमीन’ आदि नाटको में आधुनिक परिवेश के संदर्भ में प्रस्तुत किया है ।

मोहन राकेश का ‘पैर तले की जमीन’ नाटक आधुनिक यथार्थवादी धरातल पर लिखा गया है । उनका यह अन्तिम अधूरा नाटक है । इस नाटक को उनके प्रिय मित्र कमलेश्वर ने पूर्ण किया है । परिवार और समाज की टूटन इनके अन्य नाटकों का विषय रहा है । ठीक उसी प्रकार इस नाटक का भी एक विषय है । युग सत्य के साथ साथ मोहन राकेश ने आधुनिक जीवन और परिवार की भयंकर समस्याओं का, व्यक्ति के टूटने और दहशत गर्द होने का, मृत्यु के भय से बिना प्रयोजन के ही उनके एक साथ होने और एक दूसरे से बिखरने इत्यादि समस्याओं का इस नाटक में उद्घाटन किया है । साथ ही साथ सम्बन्धहीनता, वहम, नफरत, मूल्यहीनता, अनैतिकता, विकृतियाँ और कुंठा से व्यक्ति की मनः स्थितियाँ इसमें प्रकट है ।

'पैर तले की जमीन' नाटक व्यक्तिगत रूप से टूटे हुए कुछ व्यक्तियों की कहानी है । नाटक का कथानक मनुष्य के वास्तविक रूप को दिखानेवाला वर्तमान जीवन का सशक्त प्रतीक है । इस नाटक के संदर्भ में रीता कुमार ने लिखा है– "जहाँ जीवन की आस्थाएँ और विश्वास भूमिगत हो चुके हैं, धर्म और नीति की मान्यताएँ ध्वस्त हो गई हैं, सम्बन्ध विघटन से मनुष्य अजनबीपन, जीवन की निरर्थकता और बेतुके पन की यंत्रणा का असह्य बोझ ढो रहा है ।"१ प्रस्तुत नाटक के द्वारा नाटककार ने इस तथ्य की ओर संकेत किया है कि समाज में सुसंस्कृत कहलानेवाला व्यक्ति भी पैर तले की जमीन खिसकने पर एक दरिन्दा बन जाता है । बाढ़ के बढ़ने पर पानी से घिरे सभी लोग बाहर आ नहीं सकते हैं और मृत्यु की प्रतीक्षा करते रहते हैं । इस प्रकार स्पष्ट है कि मोहन राकेश ने आधुनिक परिवेश से जुड कर के बाढ़ के पानी में फँसे इंसान के बेतुकेपन की यंत्रणा, अस्तित्व की समस्या आदि का चित्रण किया है ।

मोहन राकेश ने अपने पहले तीनों नाटकों में स्त्री–पुरुष सम्बधों व्यक्ति के अस्तित्व संकट द्वंद्व आदि का चित्रण ऐतिहासिक एवं समाज के मध्यवर्गीय परिवार की कथा को आधार बनाकर मात्र घर या घरों की चार दीवारों में रहनेवाले व्यक्तियों की विभिन्न समस्याओं को आधुनिकता के रूप में प्रस्तुत किया है । जब कि प्रस्तुत नाटक 'पैर तले की जमीन' में नाटककार मोहन राकेश ने बड़े घराने के क्लब में फँसे लोगों की विभिन्न मनःस्थितियाँ, समस्याएँ आदि को आधार बनाकर आधुनिकता के रूप में रेखांकित किया है । प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु बिलकुल आधुनिक है । प्रस्तुत नाटक का घटना स्थल कश्मीर की दो छोटी नदियों के बीच के द्वीप में स्थित एक टूरिस्ट क्लब है । इस घटना स्थल में ही आधुनिकता झलकती है । क्लब में समाज के विविध वर्ग के लोग अपनी इच्छापूर्ति के लिए उपस्थित होते हैं । क्लब में आ जाने के बाद सारे लोग बाढ़ का पानी अंदर आने से परेशान हो जाते हैं । क्लब में से बाहर जाने का जो पुल होता है उसमें भी दरार पड़ने लगती है । सभी लोग दरार पडने की खबर पाकर परेशान हो जाते हैं और फिर अपनी–अपनी अन्तिम इच्छा की पूर्ति में लग जाते हैं । किन्तु बाढ़ का पानी उतरने की जानकारी प्राप्त करके सब लोग अब कोई खतरा न पाकर वापस जमीन पर अपने पाँव रखकर जीवन को सफलतापूर्वक जीने की आस रखते है । जबकि जीवन की अन्तिम क्षणों का सामना करते हुए भी कुछ लोग अपनी वासनाओं की पूर्ति में लीन हो जाते है । इस प्रकार इस नाटक में समसामयिक जीवन की विभिन्न समस्याओं पारिवारिक जीवन की विडम्बनाओं, स्त्री–पुरुष संबंधो, मृत्यु बोध से उत्पन्न स्थिति, अस्तित्व संकट, मानवीय संबंधों के बीच आया हुआ खोखलापन और तनावों आदि का यथार्थ चित्रण नाटककार ने आधुनिक संदर्भ के रूप में किया है ।

'पैर तले की जमीन' नाटक की समग्र पृष्ठ भूमि जीवन की संवेदनाओं एवं विचारधारा पर आधारित होने के कारण आधुनिकता का जीवन्त प्रमाण है । प्रस्तुत नाटक में जीवन का खोखलापन और मिथ्यावादी प्रवृत्ति के साथ आरोपण की आदत तथा झुठी आशा को जीवनाशा का आधार बनाने की प्रवृत्ति उजागर हुई है । साथ ही नाटक में यह भी रेखांकित हुआ है कि आज मूल मानव मर चुका है । उसके अन्तर में स्थित मानवीय भाव, संवेदना तथा मनुष्यता की जमीन पर उगनेवाली मानवीयता अपना आधार भी खो चुकी है । इन्सान जिंदगी जी नहीं रहा है, जिंदगी की लाश ढो रहा है, क्योंकि उसके अन्दर जिंदगी का तत्व और उसका मकसद मृतप्राय हो चुका है । सलमा द्वारा कहा गया कथन इस संदर्भ में पर्दा हटा देता है जिसे मनुष्यता की उषर जमीन और हृदय तथा संवेदना के स्तर पर मानव के मर चुकने और केवल शरीर के स्तर पर जीने की बात उजागर होती है । व्यक्ति का अस्तित्व एवं उस अस्तित्व का रक्षण तथा व्यक्ति के संकटकालीन स्थिति में परिवर्तित आचरण को यथार्थता से वर्णित किया है । प्रस्तुत नाटक में सभी पात्र अकेलेपन को बूरी तरह झेलते है । अयूब और सलमा

माँ–बाप बनने के बावजूद अलग–अलग स्तर पर अकेलेपन को मेहसूस करते है । अयूब अपने आप से भागना चाहता है । वह अकेला होना नहीं चाहता क्योंकि वह अपने आप सामना नहीं कर सकता । वह कहता है, ''फिर वही उतरती हुई रात और वही आवाजें–झीगुरों, झिल्लियों और मेंढकों की । वह एक आदम–सी दहशत, वही अकेलापन और वही अपने आप से सामना ।''२ अपने आप से भय रखना मनुष्य के बढ़ते हुए अपराध–बोध को सुचित करता है । व्यक्ति कितने ही सम्बन्धों को बनाए रखने का ढोंग रचे वह मूलतः और अंततः अकेला है । सलमा का कथन बिलकुल सही है– ''जब मुसीबत आती है तो सब अकेले ही होते हैं । मुसीबत की शकले अलग–अलग हो सकती है । छुटकारा इतना आसान तो नहीं है ।''३ यह सच है कि एक व्यक्ति की पीड़ा और संकट को कोई भी शेयर नहीं कर सकता ।

क्लब में बाढ का पानी भर जाने पर सभी अपने–अपने अस्तित्व की रक्षा करने का वैयक्तिक प्रयत्न करते हैं – नियामत अपनी बगल में क्लाक को दबाता है, जिसके द्वारा वह क्लब को खोलता और बंद करता है । अब्दुल्ला हिसाब की कापी उठाता है जिसमें वह 'बार' का पुरा हिसाब लिखकर शफी साहब को दिखाता है । पंडित ताश के पत्तों की गड्डी को उठाता है । झुनझुनवाला अपना पोर्टफोलियों बचाना चाहता है, जिसमें वह सब कुछ है जो औरों के हाथ पड़ गया तो वह कुत्ते की मोत मारा जाएगा । उसका यह कथन देखिए जो उसके अस्तित्व संकट को स्पष्ट करता है । एक और तो अतीत के सुखद एवं भोगे हुए स्वप्न दिखाई देते हैं और दूसरी ओर अपने किये हुए का विश्लेषण और आत्म स्वीकार ''मैंने पैसों के पेड़ लगाकर देखे... वे लगे, फूले–फले । जब पेड़ फूल–फल गये तो मैंने धर्म, नैतिकता, विज्ञान, राजनीति सबको अपने मूल्य दिये.... मूल्य (हँसता है ।) सीधे–सीधे कहूँ तो सबको अपना व्यापार बनाया ।.... मैं आज तक सैंकड़ों जवान लड़कियों के साथ सोया हूँ.... उनकी मर्जी से नहीं, अपनी मर्जी से । अपने दोस्तो के घरों को भी मैंने नहीं छोड़ा । मैंने सैंकड़ों कत्ल कराये । करोडों का माल स्मगल किया । लाखो रूपये रिश्वत में दिये, करोडों का टैक्स बचाकर काला धन जमा किया... ।''४ सलमा, रीता और नीरा भी अस्तित्व की सुरक्षा में संघर्षरत रहती है । किंतु जब इनके अकेले उस संकटकाल में अस्तित्व रक्षा करना कठिन हो जाता है, तो सामूहिक रूप से सभी मिलकर पत्थरों की बाड़ लगाकर अपनी अस्तित्व की रक्षा करना चाहते हैं । इस प्रयास में वे अपना विगत जीवन भी खोलकर रख देते हैं । जो बूरे कर्मो से ही भरा हुआ है । इस प्रकार नाटककार मोहन राकेश ने नाटक में आज के आधुनिक व्यक्ति के अस्तित्व पर आये संकट और अस्तित्व को सुरक्षित रखने के भाव को बड़ी तत्परता और कुशलता से चित्रित किया है ।

आधुनिक युग में स्त्री–पुरुष के पारस्परिक सम्बन्धों में विरोध है । आज के समाज में स्त्री–पुरुष का दाम्पत्य जीवन अब गुस्सा और शंका से भरा हुआ है । दोनों के मन में अलगाव, तनाव, बिखराव आदि का भाव भरा हुआ होता है । आधुनिक स्त्री–पुरुष संबंध सलमा और अयूब के द्वारा प्रकट हो जाता है । इस नाटक में अयूब और सलमा आधुनिक पति–पत्नी है जिनका वैवाहिक जीवन कुंठापूर्ण है । उनके संबंधों में एक प्रकार की कटुता है । अयूब को अपनी पत्नी सलमा पर विश्वास नहीं है । वह अपनी पत्नी के संबंध में कहता है... ''मेरी बीवी की जिन्दगी में और कोई नहीं है, पर मेरे लिए एक कब्रिस्तान बन गयी है ।.... औरत कब्रिस्तान क्यों बनती है ?''५ अयूब द्वारा कहे गए इस कथन से दोनों के अनमेलपन की सूचना मिलती है । सलमा के प्रति अयूब की सारी भावनाएँ मर चुकी है । उसके प्रति अयूब के मन में विश्वास भी नहीं है । अयूब और सलमा के बीच में संबंध के बारे में डॉ. रीताकुमार ने लिखा है.... ''अयूब और सलमा का वैवाहिक संबंधों के बोझ को ढोता जीवन वर्षो से स्थापित उस वैवाहिक संस्था की निरर्थकता को दिखाता है, जो व्यक्ति के

जीवन का आधार मानी गयी है ।''६ अब्दुल्ला एवं उसकी चार पत्नियों के द्वारा नाटककार ने पारंपारिक स्त्री–पुरुष के बीच के आपसी संबंधों को प्रस्तुत किया है । वह पहली तीन पत्नियों से संतान की प्राप्ति न होने से वह चौथी बार विवाह करता है, जिससे उसे पुत्र–प्राप्ति से वह खुश हो जाता है । लेकिन बाढ़ के पानी में फँस जाने के बाद वह अपनी मृत्यु को निकट आते देखकर पुत्र मुख देखने के लिए लालायित हो जाता है । इसी प्रकार पंडितजी का दाम्पत्य जीवन खराब है । पंडित भी घर से ही नहीं, जिन्दगी से ही बाहर किये गए निर्वासित व्यक्ति की पीड़ा सहता है । विवाहोपरांत इनकी पत्नी और झुनझुनवाला के बीच के संबंध आ जाते है । पंडित का दोस्त होने के बावजूद भी झुनझुनवाला उसे धोखा देकर उसकी पत्नी के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करता है । पंडित की पत्नी भी पति के रहते हुए भी अन्य व्यक्ति के साथ संबंध बनाये रखती है । इस प्रकार का दोनों का यह संबंध अवैध है । फलतः पंडित के दाम्पत्य जीवन की उपलब्धियाँ बिखराव, भटकन, ऊब और टूटा घर है ।

प्रस्तुत नाटक में मोहन राकेश ने बिखरे हुए दाम्पत्य जीवन का यथार्थ चित्रण किया है । मनुष्य की बुनियाद जरूरत परिवार और दाम्पत्य जीवन है । नाटककार ने इन दोनों में होनेवाली समस्याओं का उद्घाटन इस नाटक द्वारा व्यक्त किया है । दाम्पत्य जीवन की असफलता ही व्यक्ति की टूटन और पतन का मुख्य कारण है । आधुनिक मनुष्य स्वतन्त्र प्रिय है । इसलिए उन्हें अकेलापन झेलना पड़ता है । समाज में रहते हुए भी व्यक्ति उससे दूर रहता है । आज हरेक व्यक्ति अकेलेपन के चौराहे पर खड़ा है ।

वर्तमान समाज की ज्वलंत समस्या 'भ्रष्टाचार' की है । आज समाज में भ्रष्टाचार विस्तृत रूप में फैला हुआ है । नाटककार मोहन राकेश ने इस समस्या का चित्रण प्रस्तुत नाटक में झुनझुवाला बी.के मिरजा, मिस्टर सोमनाथ और नीरा के पिता कोहली साहब आदि उपस्थित एवं अनुपस्थित चरित्रों के आचरण और कार्य के द्वारा उद्घाटित किया है । झुनझुनवाला एक व्यापारी है जो शोषक और भ्रष्ट व्यक्ति है । व्यापार में करोडों का टैक्स बचाकर उसने काला धन जमा किया है । भ्रष्टाचार के इस दूषित वातावरण ने समाज को बुरी तरह से घेर रखा है । स्वयं झुनझुनवाला कहता है– ''मैं अखबारों में पढ़ता था... लोग वातावरण के दूषण के इलाज ढूँढने की कोशिश कर रहे हैं । आबोहवा में तैर गए जहर को साफ करने की तरकीबें खोज रहे हैं.... कमेटियाँ बन रही हैं । कमीशन बढ़ाए जा रहे हैं... सब पढ़कर मुझे हँसी आती थी । क्या कोई भी कमेटी, कोई भी कमीशन इस वातावरण को मुझ से साफ कर सकता है ?''७ वह इतना भ्रष्टाचारी हो गया है कि उसे स्वयं ही अपने आप पर शर्म आने लगी है । इस प्रकार मोहन राकेश ने आधुनिक मानव में उद्‌भवित भ्रष्टाचारी वृत्ति का चित्रण विभिन्न व्यक्तियों के माध्यम से यथार्थ रूप में किया है ।

आधुनिक समाज में भ्रष्टाचार की तरह ही यौन भूख की समस्या भी एक संसर्गजन्य रोग की तरह फैल रही है । वर्तमान जीवन में रोज अखबारों में कहीं न कहीं इस प्रकार की अवैध यौन समस्या की खबर पढ़ने को मिलती है । समाज में आज स्वच्छन्द यौनाचार करना कोई असामान्य नहीं तो सामान्य सी बात बनकर रह गई है । नाटककार ने आज के आधुनिक मानव की इसी समस्या को इस नाटक में उद्घाटित किया है । अयूब शादीसूदा होने के बावजूद भी वह दूसरी लड़कियों की ओर कामोत्तेजक दृष्टि से देखता है और अवैध संबंध भी रखता है । वह अपनी यौन–तृप्ति घर से बाहर कहीं पर भी किसी के भी साथ करना चाहता है । अयूब कहता है... ''मुझे एक औरत चाहिए । औरत... जो मौत के खतरे के बावजूद मेरा... साथ दे सके ।''८ अयूब के प्रस्तुत कथन को सहमति जताता हुआ पंडित कहता है– ''ऐसी औरत चाहिए जो मौत के खतरे के बावजूद साथ दे सके ।''९ क्लब में बाढ़ आ जाने के एक दिन पहले और बाढ़ आने के एक दिन बाद भी अयूब रीता के साथ

जबरदस्ती करता है । इतना ही नहीं वह तो रीता के साथ साथ नीरा को भी अपनी हवस का शिकार बनाना चाहता है । वह कहता है– ‘‘कहाँ है... कहाँ है वह छोटी लड़की !... दरिया में बह जाने से पहले एक बार... पानी यहाँ तक (गले तक) बढ़ आने से पहले एक बार मैं उसके भोलेपन के साथ... उसकी इन्नोंसेंस के साथ... ।’’१० इस कथन से स्पष्ट होता है कि आज के समय में व्यक्ति अयूब के समान अपनी ‘हवस’ में किस तरह से पशु की भाँति बन जाता है । नाटककार ने रीता के माध्यम से भी आज के इन्सान की नग्नता खोलकर सामने रख दी है वह उसे जानवर के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत करती है– ‘‘मैं उसे अपने से परे हटा रही थी और वह जानवर उसे अपने पास बुलाना चाह रहा था । वह चाह रहा था कि मरने से पहले एक बार... चाहे... कुछ भी हो... सिर्फ एक बार...।’’११ झुनझुनवाला भी पंडित की पत्नी के साथ अवैध सम्बन्ध रखता है और संपूर्ण रूप से अधिकार भी जताता है । पंडित यह सब जानते हुए भी जहर का घूंट पीकर मुँह खोलता नहीं है । पंडित के इस कथन से भी यौनाचार में लिप्त व्यक्ति का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है । जैसे वह कहता है– ‘‘मेरी औरत ! मेरी बीबी । जो मौत के खतरे के बावजूद तेरा साथ दे सकती है । ’’१२ इस प्रकार नाटककार मोहन राकेश ने नाटक की कथा में आज के इँसान की अवैध यौन संबंधी समस्या को चित्रित कर प्रस्तुत कथा को आधुनिक रूप में उद्घाटित किया है । अतः कहा जा सकता है कि नाटक की कथा बिलकुल आधुनिक है ।

संदर्भसूची

१. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : मोहन राकेश के विशेष संदर्भ में, डॉ. रीताकुमार पृ.–३१६
२. मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक, नेमिचन्द्र जैन पृ.–३९४
३. मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक, नेमिचन्द्र जैन पृ.–४०१
४. मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक, नेमिचन्द्र जैन पृ.–४३२
५. मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक, नेमिचन्द्र जैन पृ.–३८४
६. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : मोहन राकेश के विशेष संदर्भ में, डॉ. रीताकुमार पृ.–३१८
७. मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक, नेमिचन्द्र जैन पृ.–४३३
८. मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक, नेमिचन्द्र जैन पृ.–४११
९. मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक, नेमिचन्द्र जैन पृ.–४११
१०. मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक, नेमिचन्द्र जैन पृ.–४१५
११. मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक, नेमिचन्द्र जैन पृ.–४१४
१२. मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक, नेमिचन्द्र जैन पृ.–४११